PRESS CLIP

==========

Publication:- Uniindia.com (http://www.uniindia.com/bengal-chamber-organized-its-discussion-forum-on-ecological-sustainability-of-durgapur-asansol-industrial-region/east/news/1902159.html)

Date:- 28th February 2020

Page:- Online

Story Source :- UNI

7th Edition of Discussion Forum on ''Ecological Sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region'' oragnized by The Bengal Chamber on 28th February 2020 at Asansol Engineering College

Posted at: Feb 28 2020 7:50PM

Bengal Chamber organized its discussion forum on ecological sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region

Asansol, Feb 28 (UNI) In a continuous effort and exercise to address environment friendly practices particularly relevant to industrial regions of the State, The Bengal Chamber on Friday organized the 7th Edition of Discussion Forum on Ecological Sustainability in the

Please log in to get detailed story.

PRESSCLIP

==========

Publication:- Anandabazar Patrika (Bardhaman Edition)

Date:- 29th February 2020

Page:- 05

7th Edition of Discussion Forum on ''Ecological Sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region'' oragnized by The Bengal Chamber on 28th February 2020 at Asansol Engineering College

আনন্দবাজার পত্রিকা শনিবার ২৯ ফেব্রুয়ারি

দূষণ রোধ করুক শিল্প সংস্থাও, আবেদন

নিজস্ব সংবাদদাতা

আসানসোল

দূষণ ও পরিবেশের ভারসাম্যহীনতা আসানসোল-দুর্গাপুর শিল্পাঞ্চলের অন্যতম বড় সমস্যা। বিষয়টি নিয়ে নাগরিক সচেতনতা তৈরি, নানা শিল্প সংস্থাকে এগিয়ে আসার দাবি উঠল আলোচনাসভায়। শুক্রবার ওই সভার আয়োজক, 'দি বেঙ্গল চেম্বার' এবং 'রাজ্য দূষণ নিয়ন্ত্রণ পর্ষদ'। পাশাপাশি, সেখানে দূষণ এবং তা নিয়ন্ত্রণে সংস্থার ভূমিকার বিষয়ে নানা দাবি করলেন ইসিএলের সিএমডি প্রেমসাগর মিশ্র।

শহরের একটি বেসরকারি ইঞ্জিনিয়ারিং কলেজে আয়োজিত এই সভায় যোগ দেন কেন্দ্রীয় সরকারের বন ও পরিবেশ মন্ত্রক, ইসিএল ও একাধিক বেসরকারি শিল্প প্রতিষ্ঠানের কর্তারা। তাঁদের বক্তব্যে শিল্পাঞ্চলের দূষণ-সমস্যার কথা উঠে আসে।

সভায় দূষণ সংক্রান্ত বিষয়ে ইসিএল-এর দিকে অভিযোগের আঙুল ওঠে। তা জানিয়েও প্রেমসাগরবাবু বলেন, ''পরিবেশ সচেতনতায় সংস্থা নানা পদক্ষেপ করে। ইসিএল কখনই প্রয়োজনের থেকে বেশি প্রকৃতির ব্যবহার করে না।'' পাশাপাশি, তাঁর দাবি, ইসিএল গত অর্থবর্ষে প্রায় ১,৬৯৬ হেক্টর জমিতে বনসৃজন করেছে। খনি সম্প্রসারণ বা নতুন খনি খননের জন্য বনাঞ্চল ব্যবহার করায় বন দফতরকে এ পর্যন্ত ১৬০ কোটি টাকা ক্ষতিপূরণও দেওয়া হয়েছে। প্রেমসাগরবাবুর আর্জি, পরিবেশ বিষয়ে শিল্প সংস্থাকেও আরও বেশি সচেতন হবে।

শিল্প-সংস্থাগুলিকে পদক্ষেপের আর্জি জানান কেন্দ্রীয় বন, পরিবেশ ও জলবায়ু পরিবর্তন মন্ত্রকের ডেপুটি ডিরেক্টর সুব্রত মহাপাত্র, একটি বেসরকারি বিদ্যুৎ সংস্থার আধিকারিক সোমেশ দাশগুপ্তেরাও। তবে শুধু শিল্প-সংস্থা নয়, খোলা রাস্তায় টায়ার বা খড় পোড়ানোর মতো কাজ বন্ধে জনসাধারণকেও সচেতন হতে হবে, মত সুব্রতবাবুর।

পাশাপাশি, দি বেঙ্গল চেম্বার অব কমার্স অ্যান্ড ইন্ডাস্ট্রির পরিবেশ ও শক্তি বিষয়ক কমিটির চেয়ারম্যান গৌতম রায় দাবি করেন, চেম্বারের তরফে আসানসোল ও দুর্গাপুরে দূষণ রোধ ও পরিবেশের সুসংহত উন্নয়নের লক্ষ্যে নিয়মিত কাজ করা হচ্ছে।

PRESSCLIP

==

Publication:- Awaz (Asansol Edition)

Date:- 29th February 2020

Page:- 02

7th Edition of Discussion Forum on ''Ecological Sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region'' oragnized by The Bengal Chamber on 28th February 2020 at Asansol Engineering College

बंगाल चेंबर के तत्वावधान में आसनसोल इंजीनियरिंग कॉलेज में आसनसोल-दुर्गापुर औद्योगिक क्षेत्र की पारिस्थितिक स्थिरता पर चर्चा विषयक कार्यशाला का आयोजन

शिल्पांचल में पर्यावरण संरक्षण प्रदूषण को नियंत्रित करने पर विस्तृत चर्चा

आसनसोल (आवाज संवाददाता) : बंगाल चेंबर ऑफ कॉमर्स के तत्वावधान में पश्चिम बंगाल प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सहयोग से शुक्रवार को आसनसोल इंजीनियरिंग कॉलेज के विवेकानंद भवन में आसनसोल-दुर्गापुर में औद्योगिक क्षेत्र की पारिस्थितिक स्थिरता पर चर्चा विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। मौके पर ईसीएल के सीएमडी सह प्रबंध निदेशक प्रेम सागर मिश्रा, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, के उप-वन महानिदेशक सुब्रत महापात्रा, इंडिया पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड के समूह अध्यक्ष सौमेश दासगुप्ता, चेंबर के कार्यकारी निदेशक सह ऊर्जा व पर्यावरण समिति के अध्यक्ष गौतम राय, इंजीनियरिंग कॉलेज के प्राचार्य पीपी भट्टाचार्य, रजिस्ट्रार जीएस पांडा व अन्य मौजूद थे। सुब्रत महापात्रा कहा कि प्रत्येक उद्योग का अपना मुद्दा होता है। कोयला निकालने और वितरित करने के लिए सबसे कठिन खनिजों में से एक रहा है। इसका एक सरल उपाय यह था कि इसे गड्ढों में बदल दिया जाए। क्रोमाइड और लौह अयस्क जैसे अन्य खनिजों को भी कुछ स्थानों पर ले जाया गया और इससे मूल्य वृद्धि हुई। इसलिए यदि खनन उद्योग मूल्य वृद्धि को अपनाता है तो 90 प्रतिशत समस्याओं का समाधान किया जा सकता है और अवशिष्ट पदार्थ और पटरियों को काला करने जैसी समस्याओं से बचा जा सकता है। पोड़ु खेती और चराई का बुरे प्रभाव लकड़ी की तस्करी से अधिक है, क्योंकि यह युवा रोपाई की चराई करते हैं। अतिक्रमण के तहत और निजी होल्डिंग्स के तहत क्षेत्र खोजने के लिए अक्सर मुश्किल होता है। गौतम राय ने कहा कि सतत विकास पर ध्यान केंद्रित करने और औद्योगिक विकास और पारिस्थितिक स्थिरता और संरक्षण के बीच संतुलन बनाने के महत्व के बारे में जानकारी और उद्योग, व्यवसाय और समाज को शिक्षित करने के लिए प्रयास जारी है। सोमेश दासगुप्ता ने कहा कि इकोलॉजिकल सस्टेनेबिलिटी इको सिस्टम के संरक्षण का एक दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य है। स्थिरता के तीन स्तंभ हैं-आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण। 100 साल की कंपनी इंडिया पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड, सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में जीवन को छूने और काम करने के लिए ईमानदार प्रयास करके समाज और अपने लोगों के साथ मिलकर बढ़ने में विश्वास रखती है। डॉ पीपी भट्टाचार्य ने कहा कि तकनीकी विकास जिस तरह से हो रहा है, उसके कारण पारिस्थितिक स्थिरता एक उभरता हुआ मुद्दा है। मृदा प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के मुद्दे चिंता का विषय हैं।

अगले पांच साल में विदेशों में कोयला निर्यात का प्रयास: पीएस मिश्रा

बंगाल चेंबर द्वारा आयोजित आसनसोल-दुर्गापुर औद्योगिक क्षेत्र की पारिस्थितिक स्थिरता पर चर्चा विषयक कार्यशाला के बाद पत्रकारों से बात करते हुए प्रेम सागर मिश्रा ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिये जब भी कोई कोयला खदान शुरू की जाती है उसके पहले एनवॉयरमेंटल इंपैक्ट स्टेटमेंट तैयार किया जाता है कि इससे पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ेगा। जब वह ईआईए हो जाता है तो वह ईएमपी एनवॉयरमेंट मैनेजमेंट प्लान बनता है, जिसमें हवा, पानी, बायो डायवर्सिटी, जमीन सभी पर ध्यान दिया जाता है। जंगल में कोई भी खदान शुरू करने से पहले वन विभाग से नियमों के तहत अनापत्ति प्रमाण पत्र लिया जाता है। ईसीएल अंतर्गत कई खदानों के बंद रहने पर कहा कि उसके लिये कमेटी होती है जो जांच पड़ताल के बाद एनओसी देती है, वो मिलते ही शुरू हो जायेगी। आगे कहा कि हमारे सपने बड़े हैं, इसलिये हम नयी खदान खोलने जा रहे हैं, जिसमें नई तकनीक होगी, लोगों के लिये, पर्यावरण के लिये, यहां की धरती के लिये सभी के लिये प्रावधान होगा। हमारे लिये खदानों की संख्या से ज्यादा उत्पादन महत्वपूर्ण है। 2023-24 तक हमने 80 मिलियन टन कोयला उत्पादन का लक्ष्य रखा है और हम इसे प्राप्त करने के लिये अग्रसर हैं। ईसीएल का मुख्य उद्देश्य यह है कि चूंकि हम राष्ट्रीयकरण के समय पहली कोयला खदान थे, हम अगले पांच वर्षों में उत्पादन को इस स्तर तक ले जाना चाहते हैं कि हम विदेशी देशों को निर्यात करने के बारे में सोच सकें। कोयला उत्पादन के बाद खदानों को खुला छोड़ देने के सवाल पर कहा कि ईसीएल इसे लेकर गंभीर है और माइंस क्लोजर प्लान के तहत सभी खदानों की भराई की जायेगी। नयी खदानों को शुरू करने में आ रही समस्याओं को लेकर कहा कि जब भी कोई नया काम शुरू होता है तो चुनौतियां और समस्याएं आती हैं, इसके लिये हम भगवान से यह प्रार्थना नहीं करेंगे कि वह चुनौती और विपत्ति न दें, बल्कि भगवान से यह प्रार्थना रहेगी कि वह हमें इतनी शक्ति दे कि हम किसी भी चुनौती और समस्या का मजबूती से सामना कर सकें। बंद होती खदानों के बारे में उन्होंने कहा कि वे खदानों को बंद करवाने के लिये नहीं बल्कि नयी खदानों को खोलने के लिये आये हैं। लेकिन अगर ऐसा लगेगा कि किसी खदान में कर्मियों के लिये काम करना खतरा है तो हम उसे बंद करने से पीछे नहीं हटेंगे, क्योंकि हमारे लिये कर्मियों की सुरक्षा से बढ़कर कुछ नहीं है। पुनर्वासन को लेकर कहा कि ईसीएल की जो भूमिका है उसका हम निर्वाह करेंगे, बाकि राज्य सरकार का काम है।

PRESSCLIP

==========

Publication:- Bartaman (Bardhaman Edition)

Date:- 29th February 2020

Page:- 09

7th Edition of Discussion Forum on ''Ecological Sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region'' oragnized by The Bengal Chamber on 28th February 2020 at Asansol Engineering College

আসানসোলে ইঞ্জিনিয়ারিং কলেজে বিসিসিআইয়ের আলোচনা চক্র

বিএনএ, আসানসোল: শুক্রবার আসানসোল ইঞ্জিনিয়ারিং কলেজে বেঙ্গল চেম্বার অব কমার্স অ্যান্ড ইন্ডাস্ট্রির পক্ষ থেকে একটি আলোচনা চক্রের আয়োজন করা হয়। এদিনের ইকোলজিক্যাল সাস্টেনেবেলিটি ইন দ্য ইন্ডাস্ট্রিয়াল রিজিওন নামক আলোচনা চক্রে উপস্থিত ছিলেন কেন্দ্রীয় পরিবেশ মন্ত্রকের পূর্বাঞ্চলীয় শাখার ডেপুটি ডিরেক্টর জেনারেল অব ফরেস্ট সুব্রত মহাপাত্র ও ইসিএলের সিএমডি প্রেম সাগর মিশ্র। এদিন সুব্রতবাবু বলেন, আসানসোল দুর্গাপুর শিল্পাঞ্চলে কমবেশি ৩০০টি ছোট বড় কারখানা রয়েছে। প্রতিটির উপর নজরদারি চালিয়ে জরিমানা করে পরিবেশ বান্ধব করা অসম্ভব। তাই পরিবেশ বাঁচাতে নিজেদের সচেতন হতে হবে। তবে কেউ যদি একান্তই আইন না মানে তার বিরুদ্ধে ব্যবস্থা নিতেই হবে।

অন্যদিকে, প্রেম সাগরবাবু পরিবেশ রক্ষার উপর জোর দিতে গিয়ে বেদান্ত থেকে আধুনিক সিনেমার নানা উদাহরণ তুলে ধরেন। পাশাপাশি তাঁর সংস্থাও যে বিষয়টি নিয়ে সক্রিয় তা উল্লেখ করেন। ইসিএলের সিএমডি বলেন, আমরা একদিকে যেমন প্রযুক্তিকে হাতিয়ার করে উৎপাদনে জোর দিয়েছি। তেমনই 'সুদেশ' পরিকল্পনার মাধ্যমে পরিবেশ রক্ষা নিয়েও কাজ হচ্ছে। প্রসঙ্গত, আসানসোল শিল্পাঞ্চলে দূষণ বারবারই খবরের শিরোনামে উঠে এসেছে। যা কি না অনেক সময়ে দিল্লির দূষণকেও চ্যালেঞ্জ করে। সেই পরিপ্রেক্ষিতে আসানসোলে এদিনের আলোচনা চক্র যথেষ্ট তাৎপর্যপূর্ণ ছিল। এর পাশাপাশি কেন্দ্রীয় পরিবেশ মন্ত্রক থেকে বেশকিছু কোম্পানিকে দূষণ নিয়ে নোটিসও ধরানো হয়। তাই সেই মন্ত্রকের উচ্চ পদস্থ কর্তা আলোচনা চক্রে অংশ নেওয়ায় তার আলাদা গুরুত্ব ছিল। এদিনের অনুষ্ঠানের প্রারম্ভিক বক্তা ছিলেন আয়োজন সংস্থার শক্তি ও পরিবেশ কমিটির চেয়ারম্যান গৌতম রায়। এরপাশাপাশি এনিয়ে আলোচনায় অংশ নেন কলেজের অধ্যক্ষ পিপি ভট্টাচার্য, পরামর্শদাতা অতীন চৌধুরী ও সৌমেশ দাসগুপ্ত।

এদিন সুব্রতবাবু আরও বলেন, শিল্পের দূষণ তো রয়েছেই। কিন্তু, তার থেকেও বেশি উদ্বেগের দাবানল বা পশুচারণ। অনেক ক্ষেত্রে পশুচারণ, কাঠ মাফিয়াদের থেকেও পরিবেশের বেশি ক্ষতি করে। এছাড়াও নদীর ক্যাচমেন্ট এরিয়া দখল হয়ে যাওয়া নিয়েও তিনি উদ্বেগ প্রকাশ করেন।

PRESS CLIP

==========

Publication:- Business-standard.com (https://www.business-standard.com/article/pti-stories/ecl-aiming-to-export-coal-in-five-years-120022801154_1.html)

Date:- 28th February 2020

Page:- Online

Story Source :-PTI

7th Edition of Discussion Forum on ''Ecological Sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region'' oragnized by The Bengal Chamber on 28th February 2020 at Asansol Engineering College

ECL aiming to export coal in five years

Press Trust of India | Kolkata Last Updated at February 28, 2020 18:36 IST

Eastern Coalfields Ltd on Friday
said the company aims to ramp up production over the next five years to be in a position to export the dry fuel.

The Coal India subsidiary will also look at new mines, keeping environmental concerns in mind, a top company official said.

"We wish to take production in the next five years to such a level that we can think of exporting to foreign countries," ECL Chairman and Managing Director Prem Sagar Mishra was quoted as saying in a Bengal Chamber of Commerce and Industry release.

Mishra was speaking at the 7th edition of 'Discussion Forum on Ecological Sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region'.

"In the coming days, Eastern Coalfields Ltd will try to bring forth newer coal mines keeping the environmental concerns in mind.

"ECL does not want to close down any mine unless it involves some danger element or has some safety issues that might harm the miners," he said.

(This story has not been edited by Business Standard staff and is auto-generated from a syndicated feed.)

First Published: Fri, February 28 2020. 18:36 IST

PRESS CLIP

==========

Publication:- Dainik Jagaran (Asansol- Durgapur Edition)

Date:- 29th February 2020

Page:- 05

7th Edition of Discussion Forum on ''Ecological Sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region'' oragnized by The Bengal Chamber on 28th February 2020 at Asansol Engineering College.

www.jagran.com

आसनसोल/दुर्गापुर जागरण

पर्यावरण संरक्षण सतत चलने वाली प्रक्रिया

दुर्गापुर औद्योगिक क्षेत्र के पर्यावरण और उसके संरक्षण विषय पर चर्चा, खदानों का किया जाएगा निर्माण

खदानों को चालू करने में पर्यावरण के निर्देश का पालन : सीएमडी

PRESSCLIP

==========

Publication:- Ei Samay (Bardhaman Samay)

Date:- 29th February 2020

Page:- 04

7th Edition of Discussion Forum on ''Ecological Sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region'' oragnized by The Bengal Chamber on 28th February 2020 at Asansol Engineering College

নদ-নদী দখলে ধ্বংস পরিবেশ

বিশ্বদেব ভট্টাচার্য ■ আসানসোল

আলোচনা সভার সূচনায় — এই সময়

কয়লা উত্তোলন কিংবা শিল্পে দূষণ চর্চিত বিষয়। কিন্তু এই মুহূর্তে পরিবেশ ধ্বংসের অন্যতম কারণ হিসেবে উঠে আসছে দেশের নদ-নদীগুলোর উপর যথেচ্ছ অত্যাচার। দেশের বহু প্রধান নদী সংলগ্ন জমি দখলের প্রবণতা তৈরি হয়েছে। সেই দখলদারির জেরে ক্রমশ সঙ্কুচিত হচ্ছে নদী। বাধাপ্রাপ্ত হচ্ছে জলের স্বাভাবিক প্রবাহ। ওড়িশা, বিহার, পশ্চিমবঙ্গ এবং দক্ষিণ ভারতের নদ-নদীগুলোর চেহারা থেকে এর প্রমাণ মিলেছে। পরিবেশ রক্ষায় সুসংহত উন্নয়ন নিয়ে আলোচিত সভায় এমনই বক্তব্য ভারত সরকারের বন দপ্তরের ডেপুটি ডিরেক্টর জেনারেল সুব্রত মহাপাত্রের। শুক্রবার বেঙ্গল চেম্বারের উদ্যোগে আসানসোল ইঞ্জিনিয়ারিং কলেজে ওই আলোচনা সভায় প্রাধান্য পেয়েছে নদী বাঁচানোর প্রসঙ্গই।

দুর্গাপুর-আসানসোল শিল্পাঞ্চলে নদী-নালা লাগোয়া জমি দখল করে নির্মাণ অজানা নয়। আসানসোলের গাড়ুই নদীর দুই পাড় ক্রমশ দখল হয়েছে। সেখানে বেআইনি নির্মাণ গা সওয়া ব্যাপারে পরিণত হয়েছে। শিল্প-কারখানার বর্জ্যে দূষিত হয়েছে সিঙ্গারেনি নদী। দুর্গাপুরে তামলা নালার অবস্থাও একই রকম। সম্প্রতি সিঙ্গারেনি বাঁচানোর একটা উদ্যোগ নেওয়া হলেও সার্বিক ভাবে পশ্চিম বর্ধমানের নদ-নদীর স্বাস্থ্য ভঙ্গুর বলেই মত পরিবেশপ্রেমীদের।

বন দপ্তরের ডেপুটি ডিরেক্টর জেনারেলের কথায়, 'কয়লা শিল্পের জন্য সারা দেশে ২০ হাজার হেক্টর জমিতে হয়তো কাজ হচ্ছে। কিন্তু তার চেয়েও বড় সমস্যা, আমাদের নদী সমেত বহু জায়গা জবরদখল হয়ে যাচ্ছে। তার জন্য আমাদের কিছু ভাবা উচিত। দূষণ থেকে নদীকে রক্ষার মতো আইন আছে, কিন্তু নদীর দু'পাশে জবরদখল রোখার মত মতো কোনও ব্যবস্থা নেই।' নদীর পাড় কী ভাবে জবরদখল হচ্ছে তার উদাহরণ দিতে গিয়ে তিনি তামিলনাড়ু, মহারাষ্ট্রের মতো রাজ্যের কথা উল্লেখ করেছেন। একই সঙ্গে তাঁর মত, নদীর জল পাইপের মাধ্যমে জমিতে নিয়ে গিয়ে চাষের কাজে ব্যবহার করা হচ্ছে। এর থেকেও ক্ষতি হচ্ছে নদীর।

পূর্ব ও পশ্চিম বর্ধমানের অন্যতম প্রধান নদী দামোদর। এই দুই জেলাতেই এই নদীর উপর নির্বিচারে অত্যাচার চালানো হয়। পরিবেশ আদালতের বিধি অগ্রাহ্য করে বেপরোয়া ভাবে নদীর বুক থেকে তোলা হয় বালি। নদীর জলধারণের ক্ষমতা অনেকটাই নির্ভর করে বালির উপর। বালি বেশি থাকলে জলও বেশি ধরে রাখতে পারে নদী। কিন্তু বিধি বহির্ভূত ভাবে সেই বালি তুলে নেওয়ায় নদীর জলধারণের ক্ষমতাও কমছে। এ প্রসঙ্গে পরিবেশবিদ জয়া মিত্র বলেন, 'এই কথাগুলো সাধারণ মানুষকে না বলে প্রশাসনকে বলা উচিত। সাধারণ মানুষ নিজে থেকে নিয়ম ভেঙে কখনও দখল করতে যায় না। যদি তাদের বাধা দেওয়া হত, তাহলে এ ভাবে দেশজুড়ে নদীর দু'পাশ দখল হত না।' আসানসোল পুরসভার মেয়র জিতেন্দ্র তিওয়ারির বক্তব্য, 'গাড়ুই নিয়ে আমরা কমিটি গড়ে কাজ শুরু করেছি। গাড়ুইকে সাফ রাখার উদ্যোগও নিয়েছি।'

নদী বাঁচানোর সঙ্গে আলোচনায় উঠে এসেছে সুসংহত পরিবেশ বজায় রেখে কয়লা উৎপাদনের প্রসঙ্গও। ইসিএলের সিএমডি প্রেম সাগর মিশ্র বলেন, 'পরিবেশ দূষণ নিয়ে আমাদের দোষারোপ করা হয়। কিন্তু, আমরা কয়লা উৎপাদনের সঙ্গে সুদেশ বা সুন্দর দেশ তৈরি কথা ভেবেছি। পরিবেশবান্ধব উৎপাদনের প্রতি আমাদের নজর রয়েছে।' বেঙ্গল চেম্বারের পক্ষ থেকে গৌতম রায় বলেন, 'আমরা রাজ্য দূষণ নিয়ন্ত্রণ পর্ষদের সহযোগিতায় এর আগে হলদিয়া, শিলিগুড়ি, দুর্গাপুরের মত শিল্পাঞ্চলে এই ধরনের আলোচনা সভা করেছি। এ বার আসানসোলে করা হল। উন্নত প্রযুক্তির মাধ্যমে দূষণ কমানোই আমাদের লক্ষ্য।'

PRESS CLIP
==========

Publication:- Energy.economictimes.indiatimes.com (https://energy.economictimes.indiatimes.com/news/coal/ecl-aiming-to-export-coal-in-five-years/74410347)

Date:- 29th February 2020

Page:- Online

Story Source :-PTI

7th Edition of Discussion Forum on ''Ecological Sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region'' oragnized by The Bengal Chamber on 28th February 2020 at Asansol Engineering College

ECL aiming to export coal in five years

"We wish to take production in the next five years to such a level that we can think of exporting to foreign countries," ECL Chairman and Managing Director Prem Sagar Mishra was quoted as saying

PTI | February 29, 2020, 08:02 IST

Kolkata: Eastern Coalfields Ltd on Friday said the company aims to ramp up production over the next five years to be in a position to export the dry fuel.The Coal India subsidiary will also look at new mines,keeping environmental concerns in mind, a top company official said.

"We wish to take production in the next five years to such a level that we can think of exporting to foreign countries," ECL Chairman and Managing Director Prem Sagar Mishra was quoted as saying in a Bengal Chamber of Commerce and Industry release.

Mishra was speaking at the 7th edition of 'Discussion Forum on Ecological Sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region'.

"In the coming days, Eastern Coalfields Ltd will try to bring forth newer coal mines keeping the environmental concerns in mind.

"ECL does not want to close down any mine unless it involves some danger element or has some safety issues that might harm the miners," he said.

PRESS CLIP

==========

Publication:- Outlookindia.com https://www.outlookindia.com/newsscroll/ecl-aiming-to-export-coal-in-five-years/1747224)

Date:- 28th February 2020

Page:- Online

Story Source :- PTI

7th Edition of Discussion Forum on ''Ecological Sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region'' oragnized by The Bengal Chamber on 28th February 2020 at Asansol Engineering College

28 February 2020 Last Updated at 6:33 Pm | Source: PTI

ECL aiming to export coal in five years

Kolkata, Feb 28 (PTI) Eastern Coalfields Ltd on Friday said the company aims to ramp up production over the next five years to be in a position to export the dry fuel.

The Coal India subsidiary will also look at new mines, keeping environmental concerns in mind, a top company official said.

"We wish to take production in the next five years to such a level that we can think of exporting to foreign countries," ECL Chairman and Managing Director Prem Sagar Mishra was quoted as saying in a Bengal Chamber of Commerce and Industry release.

Mishra was speaking at the 7th edition of "Discussion Forum on Ecological Sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region".

"In the coming days, Eastern Coalfields Ltd will try to bring forth newer coal mines keeping the environmental concerns in mind.

"ECL does not want to close down any mine unless it involves some danger element or has some safety issues that might harm the miners," he said. PTI BSM RBT RBT

PRESSCLIP

==========

Publication:- Prabhat Khabar (Silpanchal)

Date:- 29th February 2020

Page:- 05

7th Edition of Discussion Forum on ''Ecological Sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region'' oragnized by The Bengal Chamber on 28th February 2020 at Asansol Engineering College

पर्यावरण की रक्षा के लिए विशेष योजना की जरूरत : मिश्रा

➲ बंगाल चैंबर ऑफ कॉमर्स की ओर से आयोजित परिचर्चा में बोले इसीएल के सीएमडी

आसनसोल. औद्योगिक क्षेत्र के पर्यावरण की रक्षा के लिए इलाके के संस्थानों के सम्मिलित प्रयास की जरूरत है. पर्यावरण की रक्षा और क्षेत्र के विकास के लिए विशेष योजनाओं के गठन एवं उनके गंभीरतापूर्वक क्रियान्वयन की नितांत आवश्यकता है. औद्योगिक संस्थानों में पर्यावरण रक्षा को लेकर जमीनी स्तर पर पहल करना अनिवार्य है. बंगाल चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज द्वारा दुर्गापुर-आसनसोल औद्योगिक क्षेत्र की पारिस्थितिक स्थिरता विषय पर विवेकानंद सरणी कन्यापुर स्थित आसनसोल इंजीनियरिंग कॉलेज के सभागार में शुक्रवार को आयोजित एक दिवसीय परिचर्चा सत्र में इस्टर्न कोलफील्ड लिमिटेड (इसीएल) के चेयरमैन सह प्रबंध निदेशक प्रेम सागर मिश्रा ने उक्त बातें कहीं. उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में इसीएल पर्यावरणीय चिंताओं को ध्यान में रखते हुए अत्याधुनिक तकनीकों के साथ नई कोयला खदानों में उत्पादन आरंभ करेगा. कोयला उत्पादन इसीएल का प्रमुख एवं प्रथम लक्ष्य है. इसीएल किसी भी खदान को बंद नहीं करना चाहता, जब तक कि उसमें खतरे का तत्व शामिल न हो या उसमें सुरक्षा मुद्दे खनिकों को नुकसान पहुंचा सकते है. पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार क्षेत्रीय कार्यालय पूर्व जोन के आइएफएस के वन उपमहानिदेशक सुव्रत महापात्रा ने कहा कि प्रत्येक उद्योग का अपना मुद्दा एवं महत्व होता है. संस्थान अपने औद्योगिक लाभ के साथ उत्पादन स्थल के निकट के पर्यावरण के हित को भी प्रमुखता दे. पर्यावरण एवं वनस्पतियत संतुलन बनाये रखने के लिए वनों एवं घने जंगलों को संस्थानों के स्तर से बढ़ावा देना चाहिए. भूगर्भ से उत्पादित किये जाने वाले कोयला, क्रोमाइड और लौह अयस्क जैसे खनिजों के उत्पादन प्रक्रिया के सरलीकरण और इनके उत्पादन प्रक्रिया में पर्यावरण दूषण को कम करने के मानकों पर काम करने को कहा. गौतम रॉय, चेयरपर्सन, ऊर्जा और पर्यावरण समिति, बंगाल चैंबर ने कहा कि चैंबर पश्चिम बंगाल प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सहयोग से हल्दिया, सिलीगुड़ी, दुर्गापुर के औद्योगिक क्षेत्रों में ऐसे चर्चा मंचों का आयोजन कर लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करता है. पिछले कई वर्षों से चैंबर ऊर्जा और पर्यावरण प्रबंधन के साथ स्वच्छ प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए प्रासंगिक और टिकाऊ मंच प्रदान करने का प्रयास कर रहा है. इंडिया पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड के ग्रुप प्रेसिडेंट सोमेश दासगुप्ता ने कहा कि इकोलॉजिकल सस्टेनेबिलिटी इको सिस्टम के संरक्षण का दीर्घकालिक परिपेक्ष्य है. आसनसोल इंजीनियरिंग कॉलेज के प्रिंसिपल पीपी भट्टाचार्य, रजिस्ट्रार जीएस पांडा, देवाशीष सरकार, सलाहकार अतीन चौधरी आदि उपस्थित थे.

grey matter pr

PRESS CLIP

==========

Publication:- Sangbad Pratidin (Bardhaman Edition)

Date:- 29th February 2020

Page:- 02

7th Edition of Discussion Forum on ''Ecological Sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region'' oragnized by The Bengal Chamber on 28th February 2020 at Asansol Engineering College.

আসানসোলে বেঙ্গল চেম্বারের আলোচনাসভা

শিল্পে দূষণ নিয়ন্ত্রণ নিয়ে সচেতনতার বার্তা

নিজস্ব সংবাদদাতা, আসানসোল : কোনও এলাকায় শিল্প গড়ে উঠলে সেখানে পরিবেশে একটা বিরাট প্রভাব পড়ে। এমনই মত বিশেষজ্ঞদের। তবে কোন পথে চললে পরিবেশের কম ক্ষতি হবে সেই নিয়ে আলোচনা চলছে দুনিয়া জুড়ে। উঠে আসছে বিভিন্ন মতামত। এই বিষয়ে আরও এগিয়ে যেতে শুক্রবার জাতীয় বিজ্ঞান দিবসে আলোচনাসভার আয়োজন করল দ্য বেঙ্গল চেম্বার। পরিবেশ বান্ধব প্রযুক্তি ও শক্তি জোগাতে এই বণিকসভা গত কয়েক বছর ধরে একটি মঞ্চ গড়ার লক্ষ্যে কাজ করে চলেছে। তারা আরও জোর দিয়েছে সুসংহত উন্নয়নের উপর। এই বিষয়ে শিল্পোদ্যোগী সবাইকে আরও সচেতন করতে আসানসোল ইঞ্জিনিয়ারিং কলেজে সংস্থার সপ্তম সংস্করণ কর্মসূচিটি নেওয়া হয়। এর আগে দুর্গাপুরে দু'বার, হলদিয়ায় তিনবার ও শিলিগুড়িতে একবার এই ধরণের আলোচনাচক্র অনুষ্ঠিত হয়। প্রদীপ প্রজ্বলন করে অনুষ্ঠানের উদ্বোধন করেন শক্তি ও পরিবেশ কমিটির চেয়ারপার্সন তথা বেঙ্গল চেম্বার অফ কমার্স অ্যান্ড ইন্ডাস্ট্রি ও এক্সিকিউটিভ ডিরেক্টর গৌতম রায়, ইসিএলের সিএমডি প্রেম সাগর মিশ্রা, কেন্দ্রীয় পরিবেশ, বন ও জলবায়ু পরিবর্তন মন্ত্রকের ডেপুটি ডিরেক্টর ডক্টর সুব্রত মহাপাত্র, পিপল ম্যানেজমেন্টের চেয়ারপার্সন , বেঙ্গল চেম্বার অফ কমার্স অ্যান্ড ইন্ডাস্ট্রি ও ইন্ডিয়া পাওয়ার গ্রুপের সভাপতি সোমেশ দাশগুপ্ত। শিল্প গড়তে এবং শিল্পাঞ্চলে পরিবেশ রক্ষা নিয়ে জরুরি আলোচনায় বক্তব্য রাখেন এই বিশিষ্টজনেরা। এদিন উপস্থিত ছিলেন কলেজের অধ্যক্ষ পিপি ভট্টাচার্য ও পরামর্শদাতা অতীন চৌধুরী।

অনুষ্ঠানে প্রদীপ প্রজ্বলন করছেন বেঙ্গল চেম্বারের এক্সিকিউটিভ ডিরেক্টর গৌতম রায়, ইসিএলের সিএমডি প্রেমসাগর মিশ্রা, কেন্দ্রীয় পরিবেশ, বন ও জলবায়ু পরিবর্তন মন্ত্রকের ডেপুটি ডিরেক্টর ডক্টর সুব্রত মহাপাত্র, ইন্ডিয়া পাওয়ার গ্রুপের সভাপতি সোমেশ দাশগুপ্ত। —প্রতিদিন চিত্র

শিল্পাঞ্চলে পরিবেশ দূষণ নিয়ে কার্যত নিজেদের সীমাবদ্ধতাকে স্মরণ করিয়ে দূষণ নিয়ন্ত্রণে ব্যবসায়ী ও সাধারণ মানুষের সচেতনতার উপরই জোর দিলেন কেন্দ্রীয় পরিবেশ মন্ত্রকের পূর্বাঞ্চলীয় শাখার ডেপুটি ডিরেক্টর জেনারেল অফ ফরেস্ট সুব্রত মহাপাত্র। তিনি বলেন, আসানসোল দুর্গাপুর শিল্পাঞ্চলে কমবেশি ৩০০ ছোট-বড় কারখানা রয়েছে। প্রতিটির উপর নজরদারি চালিয়ে ফাইন করে পরিবেশ বান্ধব করা সম্ভব নয়। পরিবেশ বাঁচাতে নিজেদের সচেতন হতে হবে। কেউ যদি আইন না মানে তাঁর বিরুদ্ধে ব্যবস্থা নিতেই হবে। এদিনের ইকোলজিক্যাল সাসটেনেব্যালেটি ইন দ্য ইন্ডাস্ট্রিয়াল রিজিওন নামক আলোচনা চক্রে তুলে ধরেন নদী দূষণ, দাবানল এবং পশু চারণের জন্য যে ব্যাপক পরিবেশে ক্ষতির মতো বিষয়টি। তিনি বলেন, শিল্পের দূষণ তো রয়েছেই কিন্তু তার থেকেও বেশি উদ্বেগের দাবানল বা পশুচারণ। এছাড়াও নদীর ক্যাচমেন্ট এরিয়া দখল হয়ে যাওয়া নিয়েও তিনি উদ্বেগ প্রকাশ করেন।

অনুষ্ঠানে উপস্থিত ছিলেন ইসিএলের সিএমডি প্রেমসাগর মিশ্র। তিনিও পরিবেশ রক্ষার উপর জোর দিয়ে বলেন, কয়লা উত্তোলনের পাশাপাশি ইসিএল বনসংরক্ষণে জোর দিচ্ছে। নানা পরিসংখ্যান তুলে ধরেন তিনি। এদিন অনুষ্ঠানের বাইরে সংবাদমাধ্যমকে প্রেমসাগর মিশ্র বলেন, "আমরা একদিকে যেমন প্রযুক্তিকে হাতিয়ার করে উৎপাদনে জোর দিয়েছি তেমনই 'সুদেশ' পরিকল্পনার মাধ্যমে পরিবেশ রক্ষা নিয়েও কাজ হচ্ছে। একমাত্র অসুরিক্ষত খনিই বন্ধ করা হচ্ছে। ইসিএল বন্ধে বিশ্বাসী নয়, নতুন প্রযুক্তি দিয়ে কয়লা উত্তোলনে বিশ্বাসী।" অর্থাৎ তিনি জানিয়ে দেন কোনও খনিই বন্ধ হচ্ছে না। নতুন প্রযুক্তি সঙ্গে নিয়ে খনিগুলি আবার চালু হবে।

আসানসোল শিল্পাঞ্চলের দূষণ দিল্লির দূষণকেও ছাপিয়ে গিয়েছে বলে আলোচনায় উঠে আসেন। সেই পরিপ্রেক্ষিতে আসানসোলে এই আলোচনা চক্র যথেষ্ট তাৎপর্যপূর্ণ ছিল। অনুষ্ঠানের শুরুতেই বক্তা ছিলেন আয়োজন সংস্থার শক্তি ও পরিবেশ কমিটির চেয়ারম্যান গৌতম রায়। তিনি বলেন, এখন আর কারখানা মালিকরা মধ্যরাত পর্যন্ত দূষণযন্ত্র বন্ধ করে উৎপাদনের কাজ চালাতে পারবেন না। এবার অনলাইন মনিটরিং যন্ত্র বসছে কলকাতায় রাজ্য দূষণ নিয়ন্ত্রণ পর্ষদের সদর দফতরে।

PRESSCLIP

==========

Publication:- Aajkaal

Date:- 29th February 2020

Page:- 06

7th Edition of Discussion Forum on ''Ecological Sustainability of Durgapur-Asansol Industrial Region'' oragnized by The Bengal Chamber on 28th February 2020 at Asansol Engineering College

পরিবেশরক্ষা নিয়ে আলোচনা

আজকালের প্রতিবেদন

পরিবেশরক্ষার জন্য প্রয়োজন নির্দিষ্ট পরিকল্পনা। তাকে বাস্তবে রূপ দিতে দরকার সকলের সম্মিলিত প্রয়াস। নীতি নির্ধারণের পাশাপাশি সকলকে সুশিক্ষিত করে তুলতে হবে। শুক্রবার দুর্গাপুর–আসানসোল এলাকার 'পরিবেশরক্ষা, সুসংহত উন্নয়ন' শীর্ষক এক আলোচনাসভায় এই মন্তব্য করলেন ইস্টার্ন কোল্ডফিল্ড লিমিটেডের (ইসিএল) ম্যানেজিং ডিরেক্টর প্রেমসাগর মিশ্র। বেঙ্গল চেম্বার অফ কমার্স আয়োজিত এই সভায় পরিবেশ, বন ও আবহাওয়া পরিবর্তন মন্ত্রকের ডেপুটি ডিরেক্টর জেনারেল (ভুবনেশ্বর রিজিয়ন) সুব্রত মহাপাত্রের মতে, 'শিল্প–কারখানার থেকে বেসরকারি হাতে পড়ে রয়েছে বড় অংশের জমি। সেই জমিতে নিত্যদিন ছোট ছোট ঘটনা ঘটে, তা শিল্প-কারখানার থেকে বেশি দূষণ ছড়ায়, যা সকলের নজর এড়িয়ে যাচ্ছে।'